Collegedunia NCERT नोट्स

कक्षा 6 संस्कृतम् (दीपकम्) के लिए NCERT नोट्स (2026-27 पाठ्यक्रम)

ncert class 6 sanskrit notes chapter 1 वयं वर्णमालां पठामः

अध्याय 1: वयं वर्णमालां पठामः (2026-27)

यह अध्याय संस्कृत वर्णमाला को सरल भाषा में सिखाता है।

Also see: संबंधित संसाधन: NCERT समाधान · सूत्र संग्रह · प्रश्न बैंक

Contents

1 वर्ण-परिचयः संस्कृत वर्णमाला का ढाँचा 2

1.1 वर्णों के दो भेद 3

1.2 स्वरों के भीतर के भेद 3

1.3 पाठ की पारिभाषिक शब्दावली 4

2 स्वराः: समानाक्षर, सन्ध्यक्षर और अनुनासिक 4

2.1 समानाक्षर-स्वराः 5

2.2 सन्ध्यक्षर-स्वराः 6

2.3 अनुनासिक-स्वराः 8

3 व्यञ्जनानिः चार भेदों की पूरी तस्वीर 8

3.1 व्यञ्जन में अ का योग 8

3.2 स्पर्शाः (वर्ग्याः) वर्णाः 9

3.3 अन्तःस्थाः वर्णाः 11

3.4 ऊष्म-वर्णाः तथा अयोगवाहौ 12

4 गुणिताक्षराणिः मात्रा और वर्ण का मेल 13

4.1 मात्रा-सारणी का ढाँचा 13
4.2 सभी मात्राएँ एक नज़र में 14
4.3 अयोगवाहों के साथ गुणिताक्षर 15

5 उच्चारण-स्थानानि: आस्ये षट् स्थानानि 16
5.1 छह उच्चारण-स्थान 16
5.2 एकस्थानीय वर्णों की सारणी 18
5.3 सभी वर्णों का पूरा नक्शा 19

6 द्विस्थानीय और नासिक्य वर्ण 21
6.1 कण्ठ-तालव्यौ वर्णौ 21
6.2 कण्ठोष्ठ्यौ वर्णौ 21
6.3 स्वस्थान के साथ नासिका 22
6.4 पाणिनीय-शिक्षा-सूत्राणि 24

7 मात्रा-कालः ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत 24
7.1 कुक्कुटः विरौति 24
7.2 पक्षियों की ध्वनि और मात्रा 25

8 शब्दार्थ, अभ्यास और पुनरावृत्ति 27
8.1 वयं शब्दार्थान् जानीमः 27
8.2 पाठ के अभ्यास 28
8.3 पूरे पाठ की पुनरावृत्ति 28

1 वर्ण-परिचयः संस्कृत वर्णमाला का ढाँचा

ये ncert class 6 sanskrit notes chapter 1 वयं वर्णमालां पठामः पूरे पाठ को सरल हिंदी में खोलते हैं । संस्कृत की वर्णमाला ध्वनि पर टिकी है । हर वर्ण एक ध्वनि है, और हर ध्वनि मुख के किसी एक स्थान से निकलती है । पाठ की पहली ही पंक्ति यह बात साफ कर देती है ।

पाठ का मूल वाक्य

वर्णाः द्विविधाः भवन्ति – स्वराः व्यञ्जनानि च ।
अर्थः वर्ण दो प्रकार के होते हैं, स्वर और व्यञ्जन ।

1.1 वर्णों के दो भेद

वर्ण का अर्थ है ध्वनि । संस्कृत में ध्वनि को दो बड़े खानों में बाँटा गया है । नीचे का चित्र यही बँटवारा दिखाता है ।

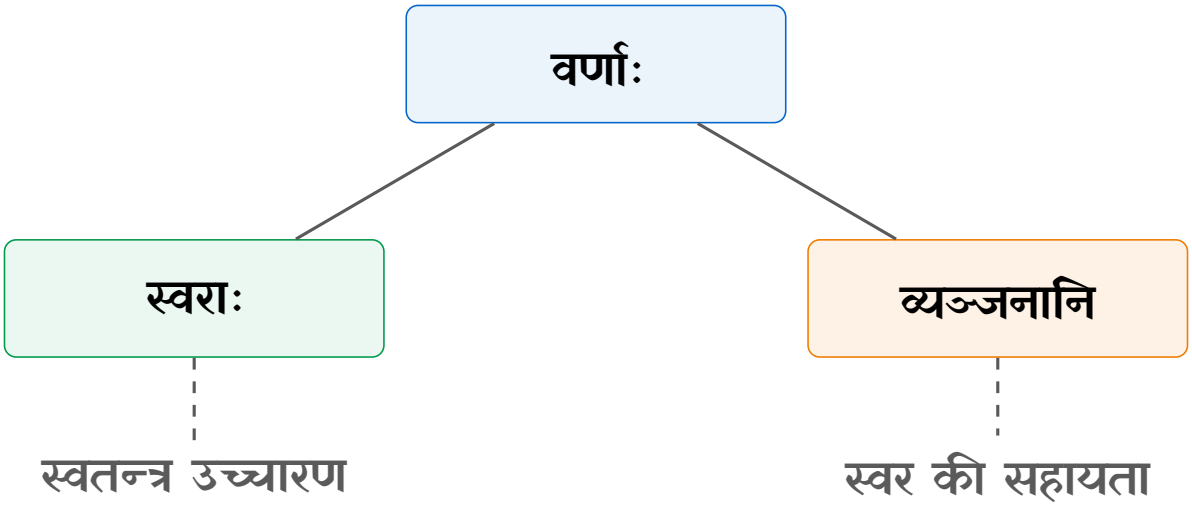

पाठ कहता है कि स्वर अपने आप बोले जा सकते हैं । व्यञ्जन को बोलने के लिए किसी स्वर की मदद चाहिए ही चाहिए ।

- **स्वराः** : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ
- **व्यञ्जनानि** : क् से ह् तक के वर्ण, तथा अं और अः
- स्वर के बिना व्यञ्जन की ध्वनि अधूरी रह जाती है

1.2 स्वरों के भीतर के भेद

स्वर भी आगे दो भागों में बँटते हैं । पाठ का वाक्य है: **स्वराः द्विविधाः सन्ति – समानाक्षराणि सन्ध्यक्षराणि च** । इसके अलावा अनुनासिक-स्वर एक तीसरी श्रेणी की तरह पढ़ाए जाते हैं ।

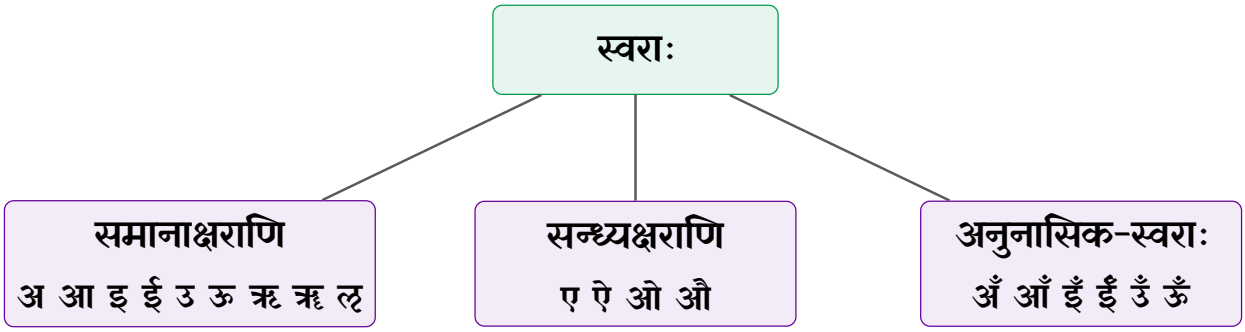

स्मरण बिंदु

समानाक्षर का मतलब है वर्णमाला के शुरू वाले सादे स्वर । सन्ध्यक्षर का मतलब है दो स्वरों के मेल से बना नया स्वर । यही अंतर परीक्षा में सबसे ज़्यादा पूछा जाता है ।

1.3 पाठ की पारिभाषिक शब्दावली

पाठ में कुछ शब्द बार-बार आते हैं । इन्हें एक बार ठीक से समझ लेने पर बाकी पाठ आसान हो जाता है ।

संस्कृत शब्द	हिंदी अर्थ	पहचान
वर्णः	ध्वनि, अक्षर	वर्णमाला की सबसे छोटी इकाई
स्वरः	स्वर	अकेले बोला जा सकता है
व्यञ्जनम्	व्यञ्जन	बोलने के लिए स्वर चाहिए
ह्रस्वः	छोटा स्वर	एक मात्रा का समय
दीर्घः	लम्बा स्वर	दो मात्रा का समय
प्लुतः	खिंचा हुआ स्वर	तीन मात्रा का समय
गुणिताक्षरम्	मात्रा लगा अक्षर	क् + आ = का
अयोगवाहः	अं तथा अः	स्वर पहले जुड़ता है

Download the Full NCERT Solutions PDF

2 स्वराः: समानाक्षर, सन्ध्यक्षर और अनुनासिक

स्वर संस्कृत उच्चारण की रीढ़ हैं । पाठ इन्हें ह्रस्व और दीर्घ के जोड़े में सजाकर दिखाता है, ताकि बच्चा एक नज़र में समझ ले कि कौन सा स्वर छोटा है और कौन सा लम्बा । यह खण्ड उसी सारणी को खोलकर पढ़ता है ।

2.1 समानाक्षर-स्वराः

पाठ की परिभाषा है: **वर्णमालायाम् आदौ ये सामान्याः स्वराः सन्ति, ते समानाक्षर-स्वराः भवन्ति ।** यानी वर्णमाला के आरम्भ के सादे स्वर ही समानाक्षर कहलाते हैं । इनमें हर छोटे स्वर का एक लम्बा जोड़ीदार होता है ।

ह्रस्वः	दीर्घः
अ	आ
इ	ई
उ	ऊ
ऋ	ॠ
ऌ	– *

** –	ए
–	ऐ
–	ओ
–	औ

स्रोत: NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 1 । ह्रस्व और दीर्घ स्वरों की मूल सारणी ।

ह्रस्वः	दीर्घः	टिप्पणी
अ	आ	सबसे पहला जोड़ा
इ	ई	तालु से
उ	ऊ	ओष्ठ से
ऋ	ॠ	मूर्धा से
ऌ	–	ऌ का दीर्घ नहीं होता

पाठ नीचे टिप्पणी में साफ लिखता है: **॥ 'ऌ'-वर्णस्य दीर्घाः न सन्ति ॥** इसलिए ऌ की पंक्ति में दीर्घ का खाना खाली रहता है ।

सामान्य भूल

बच्चे अक्सर ऌ का दीर्घ रूप ॡ लिख देते हैं । वर्णमाला की इस सारणी में ऌ का दीर्घ नहीं माना गया है । ॡ केवल गुणिताक्षर की सारणी में मात्रा-रूप में दिखता है ।

2.2 सन्ध्यक्षर-स्वराः

दूसरी श्रेणी है सन्ध्यक्षर । पाठ कहता है: **द्वयोः निश्चित-स्वरयोः सन्धिद्वारा ये नवीनाः स्वर-वर्णाः जायन्ते, ते सन्ध्यक्षर-स्वराः भवन्ति ।** दो स्वर मिलते हैं और एक नया स्वर बन जाता है ।

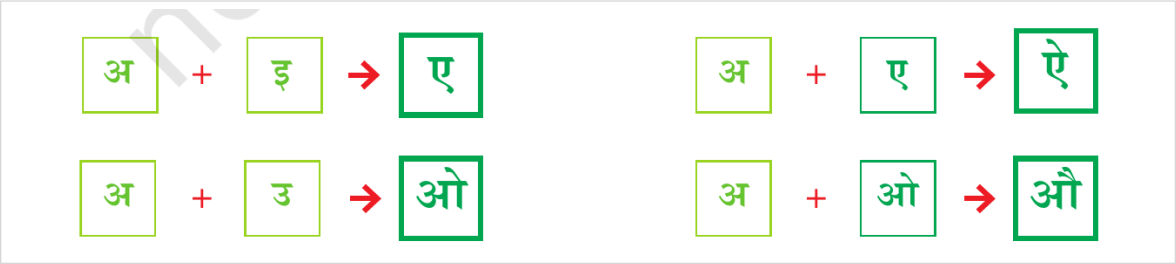

स्रोत: NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 1 । चार सन्ध्यक्षर स्वरों का बनना ।

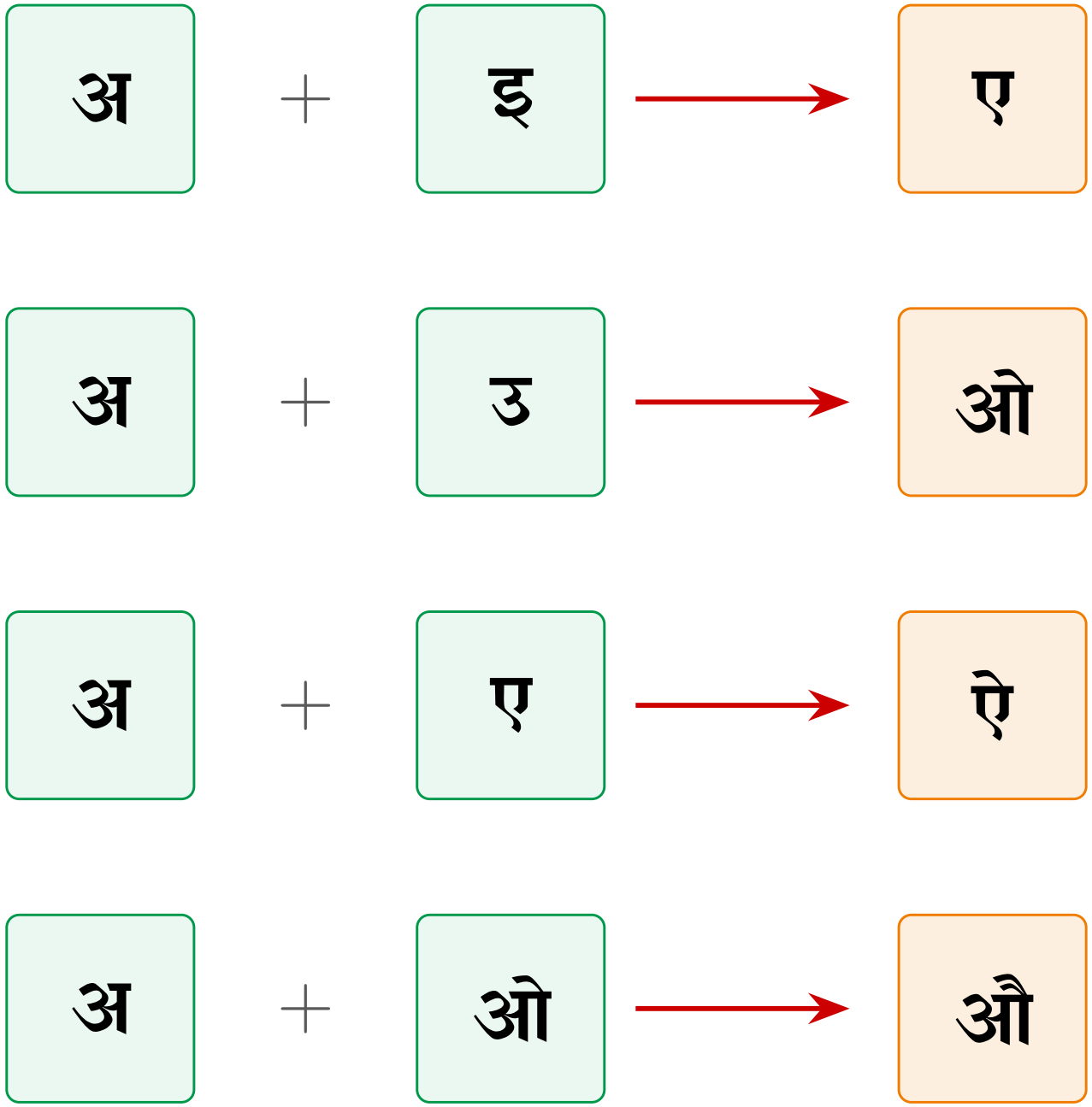

- अ + इ = ए
- अ + उ = ओ
- अ + ए = ऐ
- अ + ओ = औ

पाठ की दूसरी टिप्पणी है: **॥ सन्ध्यक्षराणां ह्रस्वाः न सन्ति ॥** इसलिए ए, ऐ, ओ, औ सदा दीर्घ माने जाते हैं । दोनों टिप्पणियाँ **इति पाणिनीय-शिक्षा-सूत्रे** से ली गई हैं ।

2.3 अनुनासिक-स्वराः

तीसरी श्रेणी अनुनासिक स्वरों की है । पाठ की परिभाषा है: **मुखेन सह नासिकया अपि उच्चारिताः स्वराः अनुनासिक-स्वराः भवन्ति** । यानी मुख के साथ नाक भी बोलने में लगती है ।

स्रोत: NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 2 । सभी अनुनासिक स्वरों की पट्टी ।

दैनिक जीवन में

हिंदी बोलते समय भी हम अनुनासिक ध्वनि रोज़ निकालते हैं । जैसे हँस, आँख, चाँद । नाक बंद हो तो ये शब्द बदले हुए सुनाई देते हैं । संस्कृत के अँ, आँ, इँ भी ठीक इसी तरह बनते हैं ।

श्रेणी	वर्ण
समानाक्षराणि	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ
सन्ध्यक्षराणि	ए ऐ ओ औ
अनुनासिक-स्वराः	अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ एँ ऐँ ओँ औँ

3 व्यञ्जनानि: चार भेदों की पूरी तस्वीर

व्यञ्जन संस्कृत वर्णमाला का बड़ा हिस्सा हैं । पाठ पहले बताता है कि व्यञ्जन को बोलने के लिए स्वर क्यों चाहिए, फिर उनके चार भेद गिनाता है । यह खण्ड उसी क्रम में चलता है ।

3.1 व्यञ्जन में अ का योग

पाठ का वाक्य है: **व्यञ्जनानाम् उच्चारणे कस्यचित् स्वरस्य सहायतायाः अपेक्षा अवश्यं भवति । अतः वर्णमालायां व्यञ्जनानाम् उच्चारणार्थं सर्वत्र अ स्वरस्य योजनं भवति ।**

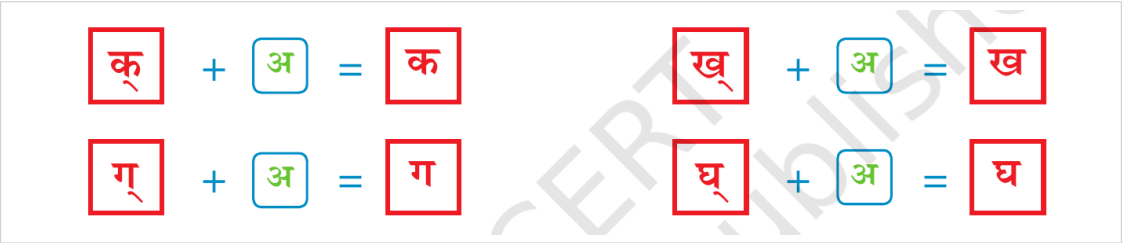

स्रोत: NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 2 । क् + अ = क जैसा उदाहरण ।

असली व्यञ्जन तो क्, ख्, ग्, घ् ही हैं । पाठ स्वयं कहता है: **अत्र व्यञ्जनं केवलं क् ख् ग् घ् इत्येव अस्ति । अत्र अ स्वरः केवलम् उच्चारणार्थं योजितः अस्ति ।**

क्	+	अ	=	क
ख्	+	अ	=	ख
ग्	+	अ	=	ग
घ्	+	अ	=	घ

स्मरण बिंदु

हलन्त का चिह्न देखकर पहचानिए । जिस अक्षर के नीचे हलन्त है, वही शुद्ध व्यञ्जन है । हलन्त हटते ही उसमें अ स्वर जुड़ चुका होता है ।

3.2 स्पर्शाः (वर्ग्याः) वर्णाः

पाठ कहता है: **व्यञ्जनानां चत्वारः भेदाः सन्ति ।** पहला भेद स्पर्श वर्णों का है । ये पाँच वर्गों में बँटे 25 वर्ण हैं ।

क-वर्गः –	क	ख	ग	घ	ङ
च-वर्गः –	च	छ	ज	झ	ञ
ट-वर्गः –	ट	ठ	ड	ढ	ण
त-वर्गः –	त	थ	द	ध	न
प-वर्गः –	प	फ	ब	भ	म

स्रोतः NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 2 । पाँच वर्गों की सारणी ।

पाठ की व्याख्या है: **स्पर्शाः (वर्ग्याः) व्यञ्जनवर्णाः स्वकीय-उच्चारण-स्थानानुसारेण पञ्चसु वर्गेषु विभक्ताः भवन्ति ।**

क-वर्गः	क	ख	ग	घ	ङ
च-वर्गः	च	छ	ज	झ	ञ
ट-वर्गः	ट	ठ	ड	ढ	ण
त-वर्गः	त	थ	द	ध	न
प-वर्गः	प	फ	ब	भ	म

याद रखने की ट्रिक

हर वर्ग का नाम उसके पहले अक्षर से बनता है । क से क-वर्गः, च से च-वर्गः, ट से ट-वर्गः, त से त-वर्गः, प से प-वर्गः । हर वर्ग में ठीक पाँच वर्ण होते हैं और आखिरी वर्ण सदा नासिक्य होता है ।

3.3 अन्तःस्थाः वर्णाः

दूसरा भेद अन्तःस्थ वर्णों का है । ये चार हैं: य र ल व । पाठ इन्हें अर्ध-स्वर भी कहता है ।

स्रोतः NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 3 । अन्तःस्थ वर्ण और उनके सन्धि-उदाहरण ।

पाठ का वाक्य है: **अन्तःस्थाः वर्णाः बहुत्र स्वर-वर्णानां स्थाने जायन्ते । अतः एते – "अर्ध-स्वराः" इत्यपि उच्यन्ते ।**

स्वर	अन्तःस्थ	पाठ का उदाहरण
इ	य्	यदि + अपि = यद्यपि
ऋ	र्	पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा
ऌ	ल्	ऌ + आकृतिः = लाकृतिः
उ	व्	सु + आगतम् = स्वागतम्

दैनिक जीवन में

स्वागतम् शब्द हम रोज़ सुनते हैं । स्कूल के द्वार पर, कार्यक्रम के मंच पर, निमंत्रण-पत्र पर । यह सु और आगतम् की सन्धि से बना है, जहाँ उ बदलकर व् हो गया । अन्तःस्थ वर्ण का यही काम है ।

३.५ ऊष्म-वर्णाः तथा अयोगवाहौ

तीसरा भेद ऊष्म वर्णों का है: श ष स ह । चौथा भेद अयोगवाह वर्णों का है: अं अः ।

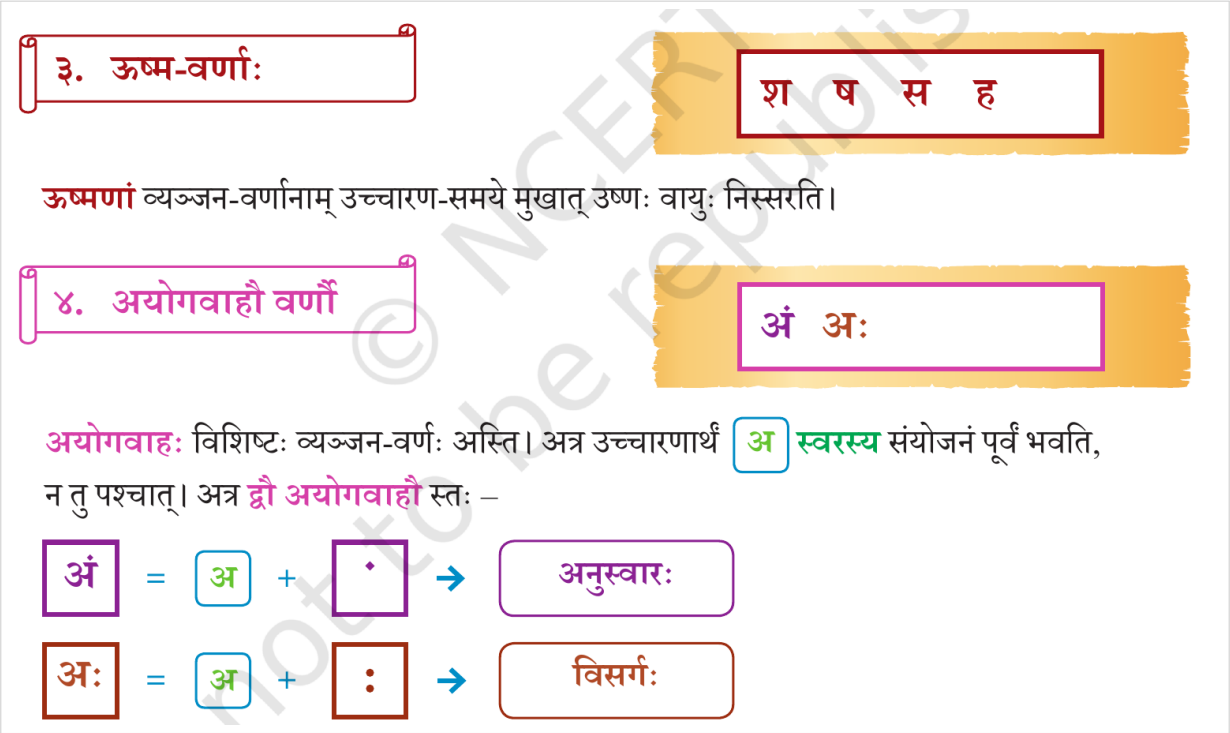

स्रोत: NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 3 । ऊष्म वर्ण, अयोगवाह और उनका बनना ।

पाठ बताता है: **ऊष्मणां व्यञ्जन-वर्णानाम् उच्चारण-समये मुखात् उष्णः वायुः निस्सरति ।** अयोगवाह के बारे में पाठ कहता है: **अयोगवाहः विशिष्टः व्यञ्जन-वर्णः अस्ति । अत्र उच्चारणार्थं अ स्वरस्य संयोजनं पूर्वं भवति, न तु पश्चात् ।**

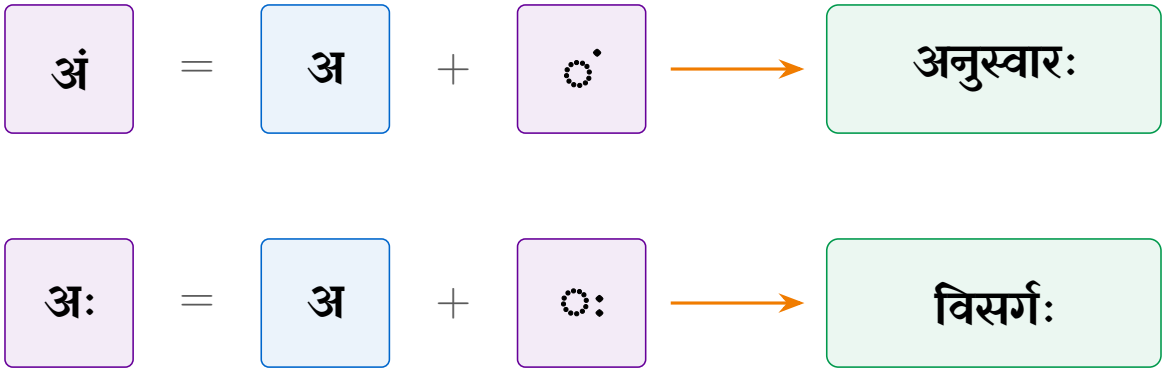

इसीलिए अं और अः को साधारण व्यञ्जन नहीं माना जाता । इनमें अ स्वर पहले जुड़ता है, बाद में नहीं । यही उल्टा क्रम अयोगवाह की सबसे पक्की पहचान है ।

4 गुणिताक्षराणिः मात्रा और वर्ण का मेल

व्यञ्जन के साथ स्वर जुड़ने पर जो नया अक्षर बनता है, उसे गुणिताक्षर कहते हैं । पाठ का वाक्य है: **व्यञ्जनैः सह सर्वेषाम् अपि स्वराणां संयोजनं भवति । व्यञ्जनैः सह स्वराणां संयोजनेन गुणिताक्षराणि भवन्ति** । यह खण्ड मात्राओं की पूरी सारणी पढ़ाता है ।

4.1 मात्रा-सारणी का ढाँचा

पाठ की सारणी में ऊपर स्वर हैं, उनके नीचे मात्राएँ हैं और बाईं ओर व्यञ्जन हैं । दोनों को मिलाकर खाना भरना होता है ।

	स्वराः →	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
व्यञ्जनानि	मात्राः →		ा	ि	ी	ु	ू
↓							
क् →		क	का	कि	की	कु	कू
ख् →							
ग् →							
घ् →							
ङ् →							
च् →		च	चा	चि	ची	चु	चू
छ् →							
ज् →							
झ् →							
ञ् →							

स्रोतः NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 4 । गुणिताक्षर सारणी का आरम्भ ।

© NCERT not to be republished

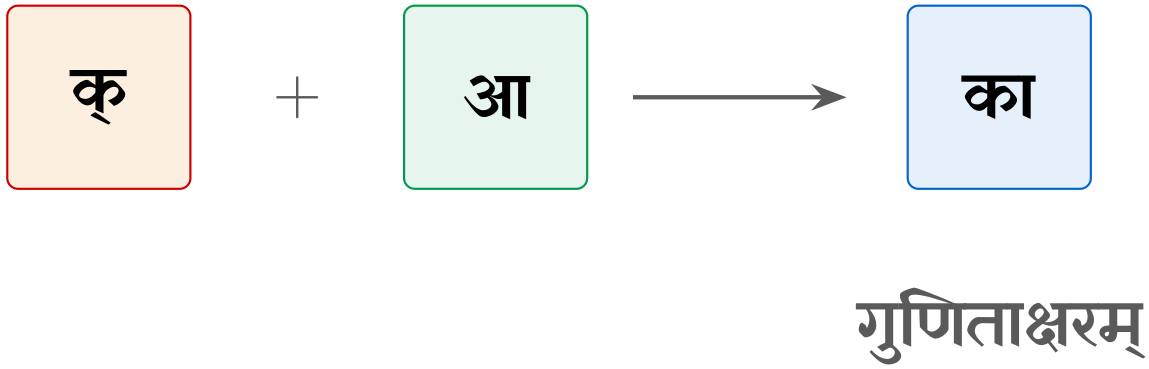

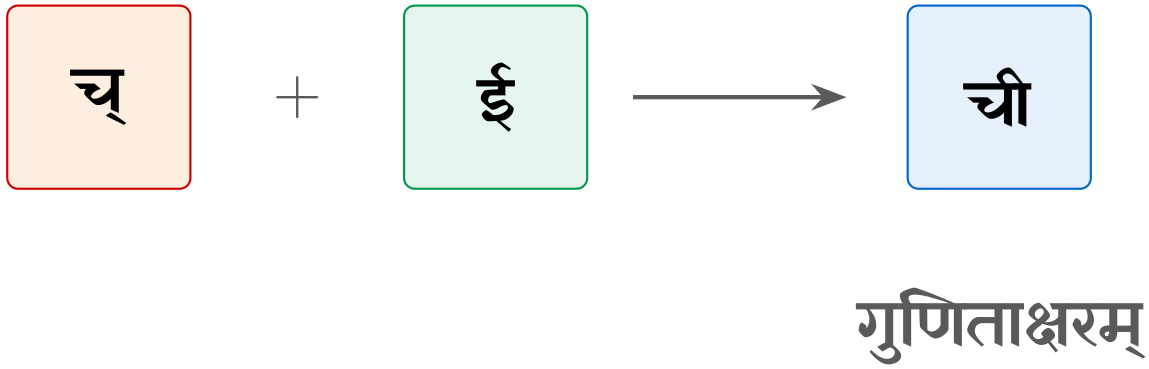

4.2 सभी मात्राएँ एक नज़र में

पाठ पृष्ठ ४ से ९ तक हर व्यञ्जन के साथ हर स्वर जोड़कर दिखाता है । नीचे की सारणी उसी का सार है ।

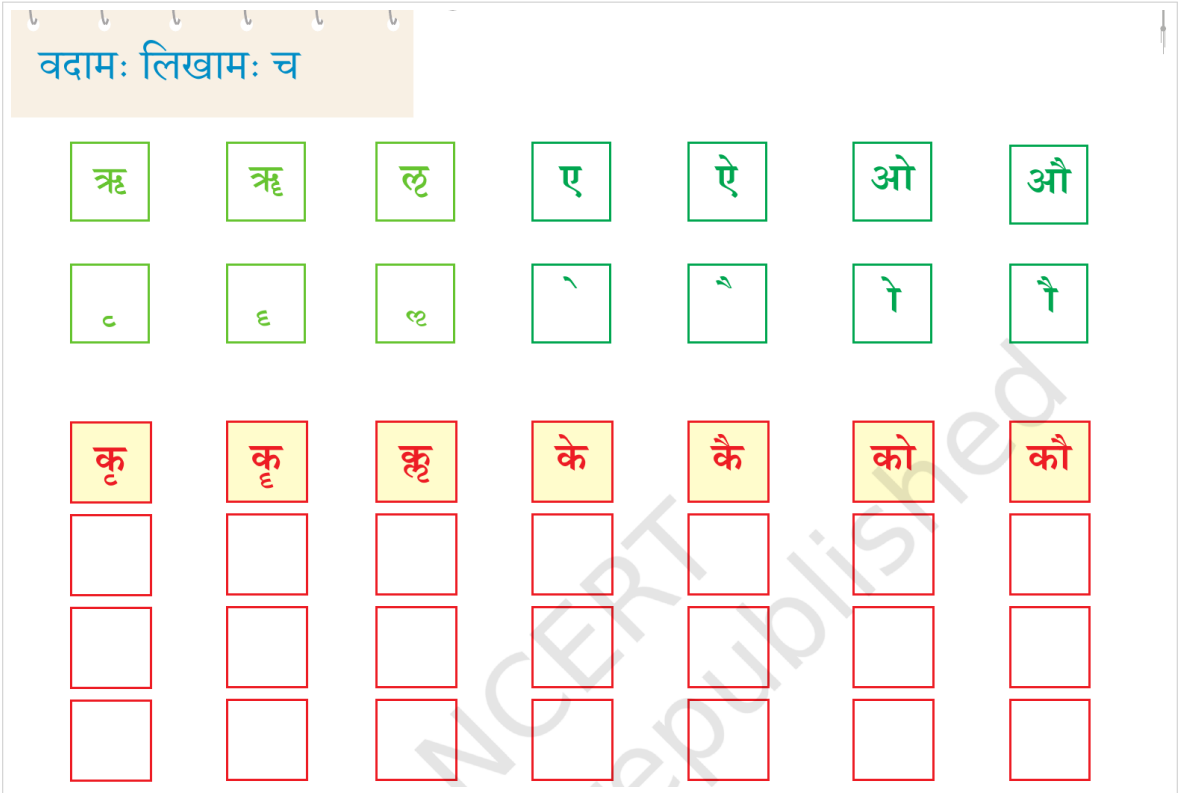

स्रोत: NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 5 । ऋ से औ तक की मात्राएँ और क् से बने गुणिताक्षर ।

स्वर	मात्रा	क् से	स्वर	मात्रा	क् से
अ	कोई नहीं	क	ऋ	ृ	कृ
आ	ा	का	ॠ	ॄ	कॄ
इ	ि	कि	ऌ	ॢ	कॢ
ई	ी	की	ए	े	के
उ	ु	कु	ऐ	ै	कै
ऊ	ू	कू	ओ	ो	को
			औ	ौ	कौ

सामान्य भूल

अ की कोई अलग मात्रा नहीं होती । बच्चे अक्सर अ के खाने में भी कोई चिह्न ढूँढ़ते हैं । सारणी में वह खाना जान-बूझकर खाली रखा गया है, क्योंकि व्यञ्जन में अ पहले से जुड़ा होता है ।

4.3 अयोगवाहों के साथ गुणिताक्षर

अं और अः भी हर स्वर के साथ जुड़ते हैं । पाठ पृष्ठ 8 और 9 पर इन्हें अलग पंक्तियों में दिखाता है ।

रूप						
अनुस्वार-युक्त	अं	आं	इं	ईं	उं	ऊं
विसर्ग-युक्त	अः	आः	इः	ईः	उः	ऊः
क् से बने	कं	कां	कः	काः		
ख् से बने	खं	खां	खः	खाः		

स्मरण बिंदु

अनुस्वार सदा अक्षर के ऊपर बिंदु के रूप में बैठता है । विसर्ग सदा अक्षर के बाद दो बिंदुओं के रूप में आता है । लिखते समय यह स्थान कभी न बदलें ।

5 उच्चारण-स्थानानिः आस्ये षट् स्थानानि

पाठ का योग्यताविस्तर खण्ड यह सिखाता है कि हर वर्ण मुख के किस हिस्से से निकलता है । यही संस्कृत उच्चारण की असली कुंजी है । इस खण्ड में छहों स्थान और उनके वर्ण क्रम से आते हैं ।

5.1 छह उच्चारण-स्थान

पाठ पूछता है: **वर्णानाम् उच्चारणं कथं भवति ? इति ज्ञास्यामः ।** फिर उत्तर देता है कि मुख में पाँच स्थान हैं और नासिका में एक । कुल छह स्थान बनते हैं ।

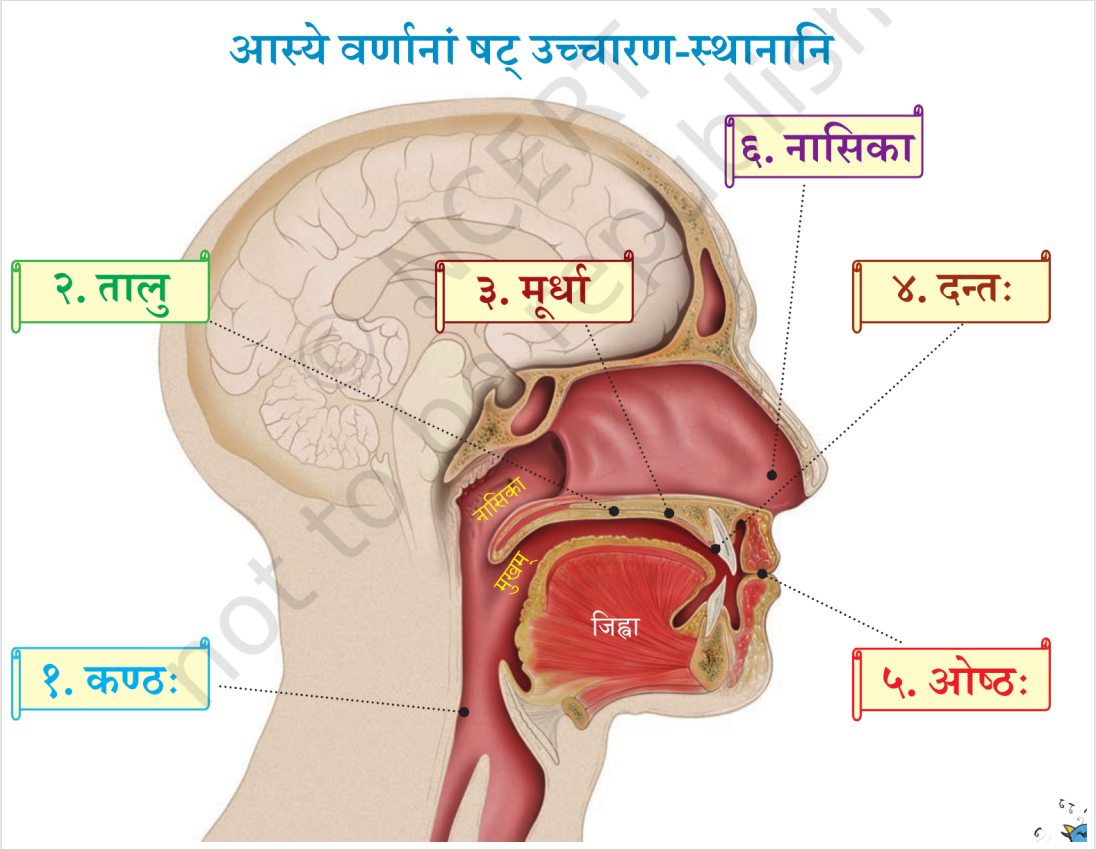

स्रोत: NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 15 । आस्ये वर्णानां षट् उच्चारण-स्थानानि ।

पाठ की पक्तियाँ हैं: **मुखे (Mouth) – पञ्चसु स्थानेषु**, तथा **नासिकायाम् (Nose) – एकस्मिन् स्थाने ।** दोनों मिलकर छह स्थान बनाते हैं ।

१. कण्ठः	अ आ, क ख ग घ ङ, ह, अः
२. तालु	इ ई, च छ ज झ ञ, य, श
३. मूर्धा	ऋ ॠ, ट ठ ड ढ ण, र, ष
४. दन्तः	ऌ, त थ द ध न, ल, स
५. ओष्ठः	उ ऊ, प फ ब भ म
६. नासिका	अं, ङ ञ ण न म

याद रखने की ट्रिक

गले से होंठ तक की यात्रा सोचिए । कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ । ध्वनि पीछे से आगे बढ़ती है । छठा स्थान नासिका ऊपर की ओर अलग खड़ा है ।

5.2 एकस्थानीय वर्णों की सारणी

जिन वर्णों का उच्चारण केवल एक ही स्थान से होता है, उन्हें एकस्थानीय कहते हैं । पाठ पृष्ठ 21 पर इनकी सूची देता है ।

स्थान	स्वर	व्यञ्जन
कण्ठ्याः	अ आ	क ख ग घ, ह, अः
तालव्याः	इ ई	च छ ज झ, य, श
मूर्धन्याः	ऋ ॠ	ट ठ ड ढ, र, ष
दन्त्याः	ऌ	त थ द ध, ल, स
ओष्ठ्याः	उ ऊ	प फ ब भ
नासिक्याः	अं	

5.3 सभी वर्णों का पूरा नक्शा

पाठ के अंत में एक बड़ा चित्र सारे वर्णों को उनके स्थान पर बैठा देता है । द्विस्थानीय वर्ण दो जगह दिखाई देते हैं ।

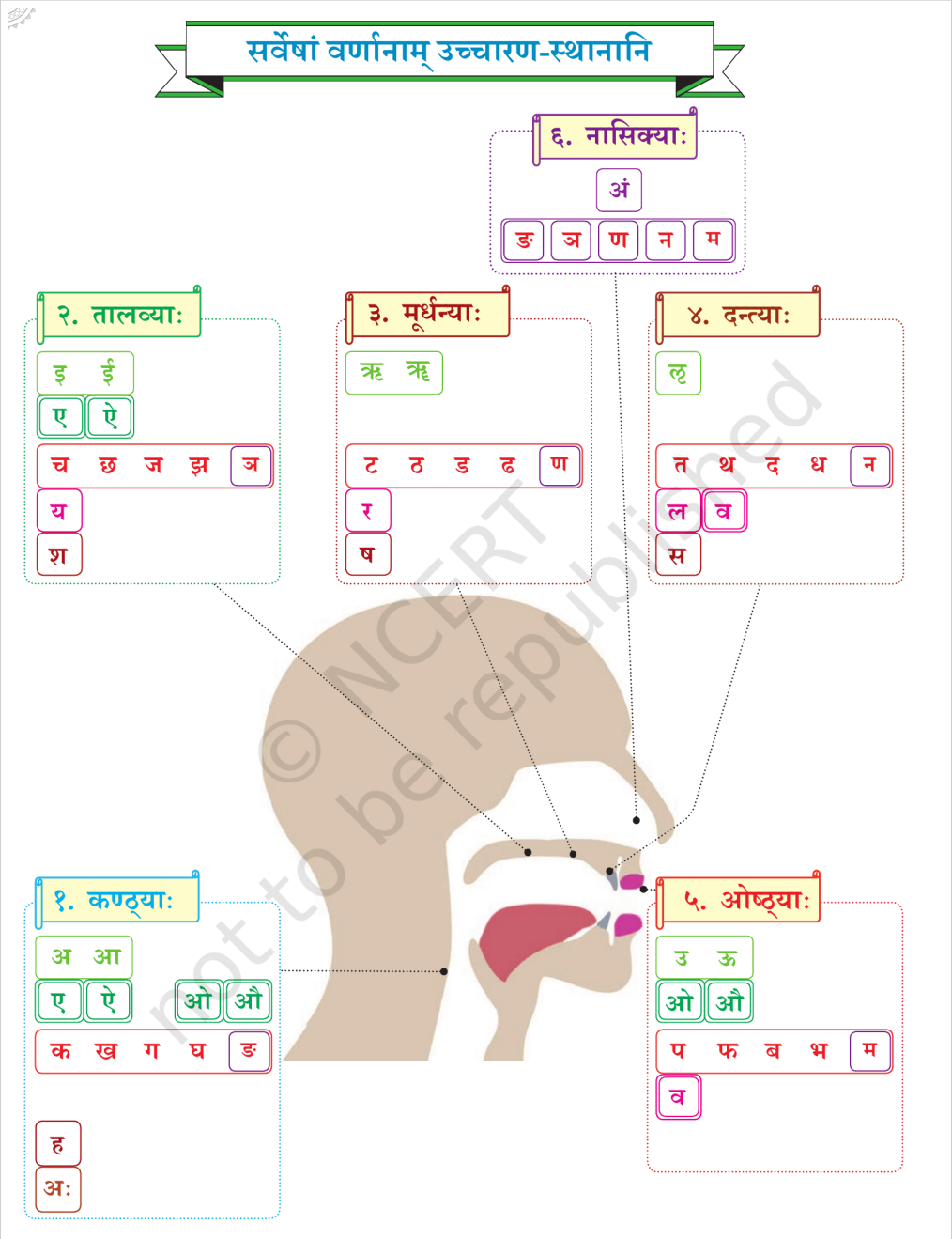

स्रोतः NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 22 । सर्वेषां वर्णानाम् उच्चारण-स्थानानि ।

दैनिक जीवन में

सर्दी में नाक बंद हो जाए तो म और न ठीक से नहीं बोले जाते । म की जगह ब जैसी ध्वनि निकलती है । यही प्रमाण है कि ये वर्ण सचमुच नासिका से बनते हैं ।

Download the Full Chapter PDF from the NCERT Book

6 द्विस्थानीय और नासिक्य वर्ण

कुछ वर्ण एक नहीं, दो स्थानों से मिलकर बनते हैं । इन्हें द्विस्थानीय वर्ण कहते हैं । पाठ इन्हें अलग चित्रों में दिखाता है ताकि अंतर साफ रहे । यह खण्ड उन्हीं वर्णों को खोलता है ।

6.1 कण्ठ-तालव्यौ वर्णौ

ए और ऐ का उच्चारण कण्ठ और तालु दोनों से होता है । इसीलिए ये सन्ध्यक्षर भी हैं और द्विस्थानीय भी ।

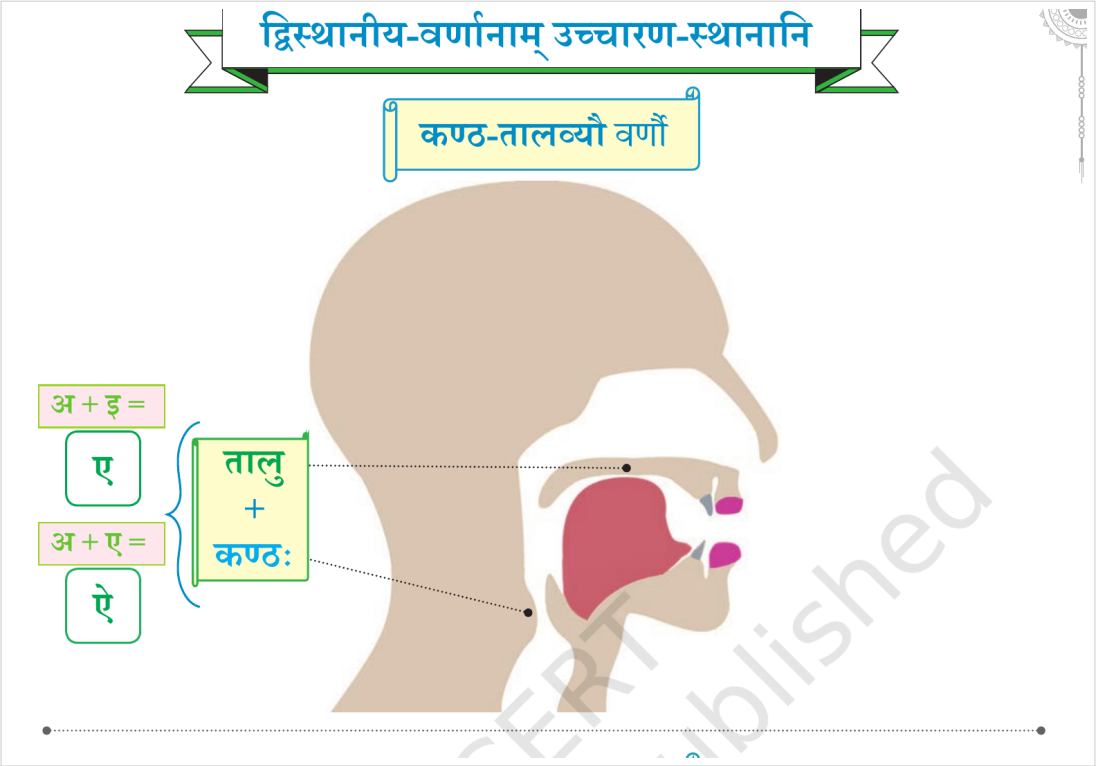

स्रोत: NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 19 । कण्ठ-तालव्यौ वर्णौ ए और ऐ ।

- अ (कण्ठ) + इ (तालु) = ए
- अ (कण्ठ) + ए (कण्ठ-तालु) = ऐ

6.2 कण्ठोष्ठ्यौ वर्णौ

ओ और औ का उच्चारण कण्ठ और ओष्ठ दोनों से होता है । बनावट का तरीका ठीक ऊपर वाला ही है, बस दूसरा स्थान बदल जाता है ।

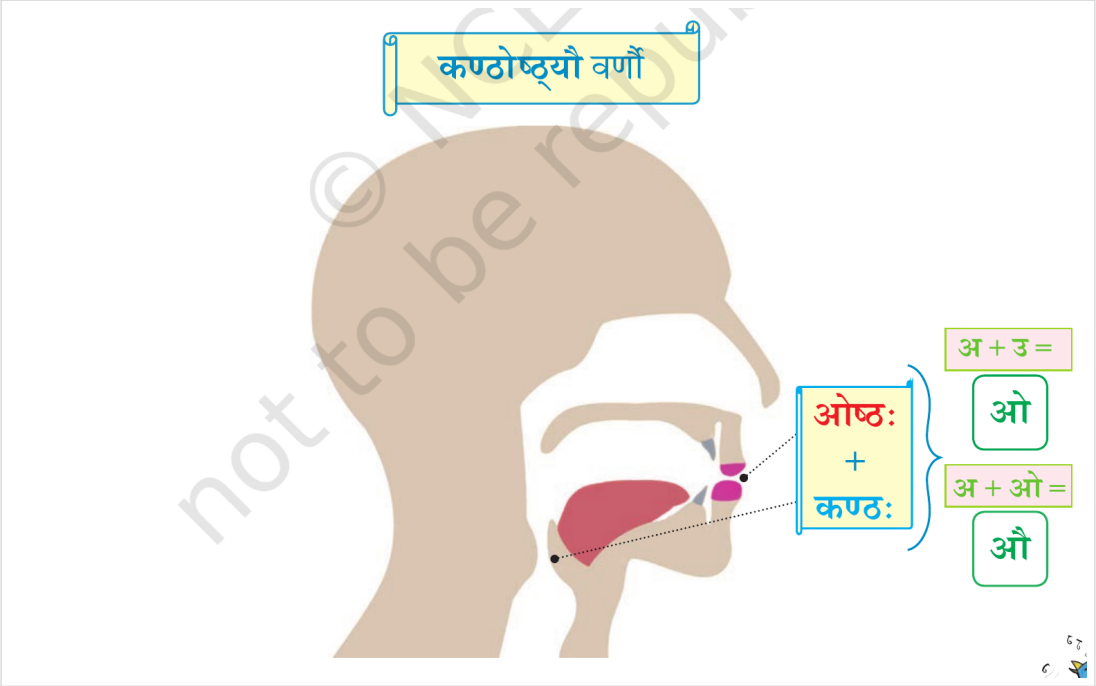

स्रोत: NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 19 । कण्ठोष्ठ्यौ वर्णौ ओ और औ ।

कण्ठः	+	तालु	→	ए
कण्ठः	+	तालु	→	ऐ
कण्ठः	+	ओष्ठः	→	ओ
कण्ठः	+	ओष्ठः	→	औ

6.3 स्वस्थान के साथ नासिका

पाँच वर्गों का अंतिम वर्ण अपने वर्ग के स्थान के साथ नासिका से भी बोला जाता है । इसीलिए ये पाँचों नासिक्य कहलाते हैं ।

कण्ठः + नासिका → ङ

तालु + नासिका → ञ

मूर्धा + नासिका → ण

दन्तः + नासिका → न

ओष्ठः + नासिका → म

पाठ एक और द्विस्थानीय वर्ण देता है । व का उच्चारण दन्त और ओष्ठ दोनों से होता है, इसलिए उसे **दन्त्योष्ठ्यः वर्णः** कहा गया है ।

सामान्य भूल

ङ, ञ, ण, न, म को केवल नासिक्य मान लेना गलत है । पाठ का सूत्र कहता है कि इनका उच्चारण अपने स्थान और नासिका, दोनों जगह से होता है । इसलिए ये पूरे नक्शे में दो बार दिखते हैं ।

6.4 पाणिनीय-शिक्षा-सूत्राणि

पाठ के अंत में उच्चारण-स्थानों के पारम्परिक सूत्र दिए गए हैं । ये सूत्र पूरे नियम को एक पंक्ति में बाँध देते हैं ।

उच्चारण-स्थानों के मूल सूत्र

अकुहविसर्जनीयाः कण्ठ्याः ।
इचुयशाः तालव्याः ।
ऋटुरषाः मूर्धन्याः ।
लृतुलसाः दन्त्याः ।
उपूपध्मानीयाः ओष्ठ्याः ।

सूत्रम्	अर्थः
ङञणनमाः स्वस्थान-नासिकास्थानाः	ङ, ञ, ण, न, म का उच्चारण अपने स्थान के साथ नासिका से भी होता है
ए ऐ कण्ठतालव्यौ	ए और ऐ का उच्चारण कण्ठ तथा तालु दोनों से होता है
ओ औ कण्ठोष्ठ्यौ	ओ और औ का उच्चारण कण्ठ तथा ओष्ठ दोनों से होता है
वकारो दन्त्योष्ठ्यः	व का उच्चारण दन्त तथा ओष्ठ दोनों से होता है
अनुस्वारयमा नासिक्याः	अनुस्वार अं का उच्चारण नासिका से होता है

स्मरण बिंदु

सूत्र का पहला शब्द ही उसके वर्ण गिना देता है । अकुहविसर्जनीयाः में अ, कु यानी क-वर्ग, ह और विसर्ग छिपे हैं । सूत्र का अंतिम शब्द स्थान बताता है ।

7 मात्रा-कालः ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत

पाठ का परियोजनाकार्यम् खण्ड ध्वनि की लम्बाई सिखाता है । इसे मात्रा-काल कहते हैं । पशु-पक्षियों की आवाज़ से यह बात बहुत सुंदर ढंग से समझाई गई है ।

7.1 कुक्कुटः विरौति

मुर्गे की बाँग के उदाहरण से पाठ चारों काल दिखाता है । एक ही स्वर उ को खींचकर बोलने पर उसका नाम बदल जाता है ।

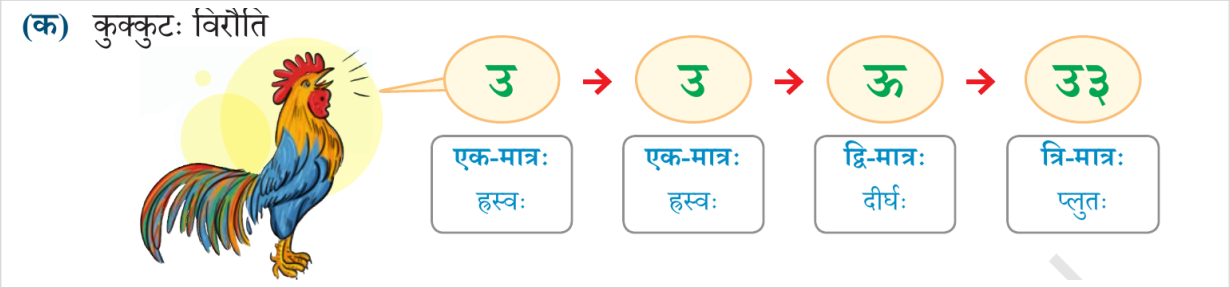

स्रोत: NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 23 । कुक्कुटः विरौति और मात्रा-काल ।

	एक-मात्रः	ह्रस्वः
	द्वि-मात्रः	दीर्घः
	त्रि-मात्रः	प्लुतः
	अर्ध-मात्रः	व्यञ्जनम्

- उ = एक-मात्रः, ह्रस्वः
- ऊ = द्वि-मात्रः, दीर्घः
- उ३ = त्रि-मात्रः, प्लुतः
- व्यञ्जन = अर्ध-मात्रः

7.2 पक्षियों की ध्वनि और मात्रा

पाठ एक श्लोक देता है जिसमें चार जीवों की आवाज़ से चार मात्रा-काल जोड़े गए हैं ।

पाठ का श्लोक

चाषस्तु वदते मात्रां द्विमात्रं त्वेव वायसः ।
शिखी रौति त्रिमात्रं तु नकुलस्त्वर्धमात्रकम् ॥

(ख)

चाषस्तु वदते मात्रां द्विमात्रं त्वेव वायसः ।
शिखी रौति त्रिमात्रं तु नकुलस्त्वर्धमात्रकम् ।।

१.	चाषः (नीलकण्ठः) पक्षी	–	एक-मात्रं ध्वनिं करोति ।	(ह्रस्व-स्वरः इव)
२.	वायसः (काकः) पक्षी	–	द्वि-मात्रं ध्वनिं करोति ।	(दीर्घ-स्वरः इव)
३.	शिखी (मयूरः) पक्षी	–	त्रि-मात्रं ध्वनिं करोति ।	(प्लुत-स्वरः इव)
४.	नकुलः पशुः	–	अर्ध-मात्रं ध्वनिं करोति ।	(व्यञ्जनम् इव)

स्रोतः NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 23 । श्लोक और चारों जीवों की मात्रा-सूची ।

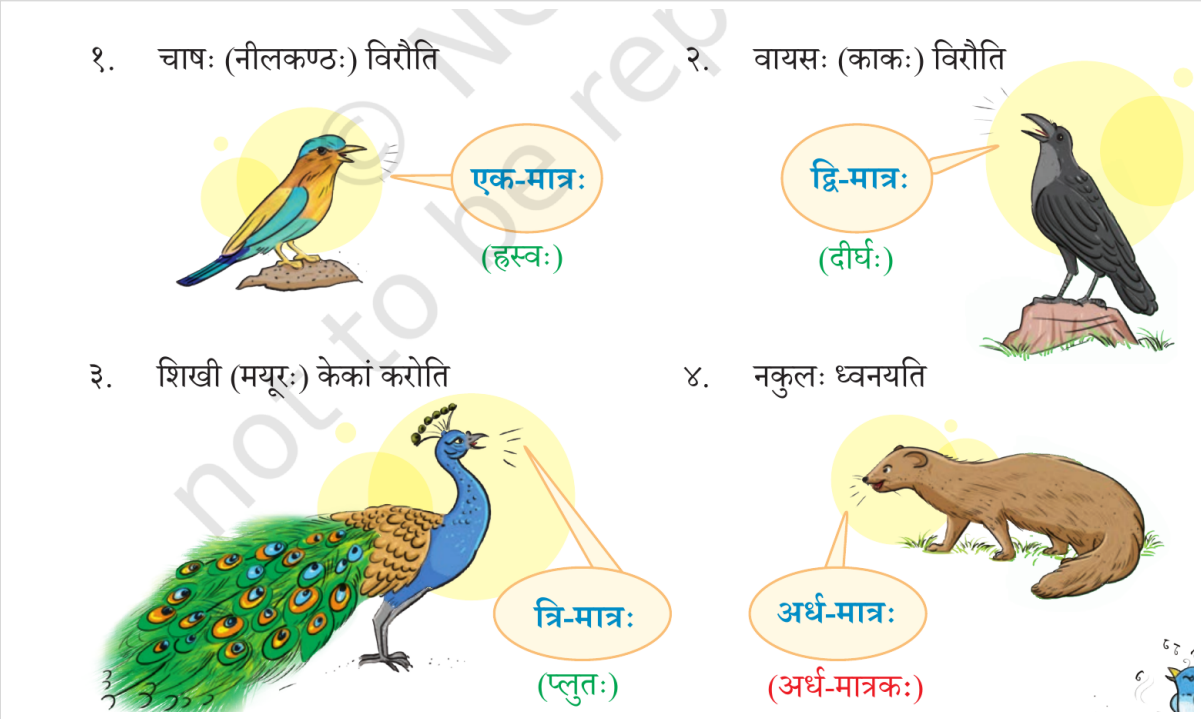

स्रोतः NCERT दीपकम्, कक्षा 6, पाठ 1, पृष्ठ 23 । चाष, वायस, शिखी और नकुल की ध्वनि ।

जीव	मात्रा	तुलना
चाषः (नीलकण्ठः) पक्षी	एक-मात्रम्	ह्रस्व-स्वरः इव
वायसः (काकः) पक्षी	द्वि-मात्रम्	दीर्घ-स्वरः इव
शिखी (मयूरः) पक्षी	त्रि-मात्रम्	प्लुत-स्वरः इव
नकुलः पशुः	अर्ध-मात्रम्	व्यञ्जनम् इव

दैनिक जीवन में

कोयल की कूक लम्बी होती है और गौरैया की चहक छोटी । वही अंतर ह्रस्व और दीर्घ का है । पाठ ने यह बात पक्षियों से जोड़कर याद रखने लायक बना दी है ।

याद रखने की ट्रिक

आधी, एक, दो, तीन । नकुल आधी, चाष एक, वायस दो, शिखी तीन । इसी क्रम में गिनते जाइए, चारों मात्रा-काल कभी नहीं भूलेंगे ।

8 शब्दार्थ, अभ्यास और पुनरावृत्ति

पाठ के अंत में शब्दार्थ की सारणी और अभ्यास दिए गए हैं । यह खण्ड उन्हीं को समेटता है और परीक्षा की दृष्टि से पूरे पाठ की पुनरावृत्ति कराता है ।

8.1 वयं शब्दार्थान् जानीमः

पाठ की शब्द-सारणी में हर शब्द का संस्कृत अर्थ, हिंदी अर्थ और अंग्रेज़ी अर्थ दिया गया है । नीचे उसका मुख्य भाग है ।

शब्दः	अर्थः	हिंदी	English
पित्राज्ञा	पितुः आदेशः	पिता का आदेश	Father's order
लाकृतिः	'ऌ'-वर्णस्य आकृतिः	'ऌ'-वर्ण का रूप	Shape of letter 'ऌ'
एकैकः	प्रत्येकम्	हर एक	Each one
अजः	छागः	बकरा	Goat
वधूः	परिणीता	विवाहिता नारी	Married woman
मातृणम्	मातुः ऋणम्	माता का ऋण	Indebtedness to Mother
कॢप्तम्	कल्पितम्	माना हुआ	Supposed
ऌकारः	'ऌ'-वर्णः	'ऌ' वर्ण	Letter 'ऌ'
ओम्	प्रणवः	एकाक्षर ब्रह्म	Name of Brahma
औषधम्	भेषजम्	औषध	Medicine
जिह्वा	रसना	जीभ	Tongue
नामधेयम्	नाम	नाम	Name
भगिनी	स्वसा	बहन	Sister
भ्राता	अनुजः / अग्रजः	भाई	Brother
पितामही	पितुः माता	दादी	Paternal Grandmother
पितामहः	पितुः पिता	दादा	Paternal Grandfather
मातामही	मातुः माता	नानी	Maternal Grandmother
मातामहः	मातुः पिता	नाना	Maternal Grandfather
सुश्रीः	कुमारी	कुमारी	Miss
श्रीः	लक्ष्मीः, सुन्दरता	लक्ष्मी, सौन्दर्य	Goddess of prosperity
उपाधिः	विशिष्टता	विशेषता	Title

शब्दः	अर्थः	हिंदी	English
प्रथम-नाम	मुख्यं नाम	पहला नाम	First Name
मध्य-नाम	मध्यवर्त्ति नाम	बीच का नाम	Middle Name
अन्त्य-नाम	अन्तिम-नाम	अन्तिम नाम	Last Name
कुल-नाम	कुलस्य गोत्रस्य वंशस्य वा नाम	कुल गोत्र या वंश का नाम	Family Name

8.2 पाठ के अभ्यास

पाठ में छह अभ्यास दिए गए हैं । इनका उद्देश्य वर्ण पहचानना, संयुक्त वर्ण भरना और नाम लिखना है ।

1. कस्य चित्रम् ? वदन्तु लिखन्तु च । चित्र देखकर संस्कृत में नाम लिखिए, जैसे गणेशः ।
2. चित्रं पश्यन्तु । पिट्टकातः समुचितान् वर्णसमूहान् चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयन्तु ।
3. प्रथम-वर्णेन पदं वदन्तु लिखन्तु च । जैसे अ से अग्निः, अस्त्रम् ।
4. स्व-परिवारस्य सदस्यानां पूर्ण-नामानि लिखन्तु ।
5. कक्षायाः शिक्षिकाणां शिक्षकाणां च पूर्ण-नामानि लिखन्तु ।
6. मित्राणां पूर्ण-नामानि लिखन्तु ।

अभ्यास 2 का पिट्टका इस प्रकार है: क्का, त्रि, ण्डः, ञ्चुः, क्षः, ङ्क, ङ्खः, न्ताः, न्द्रः, ष्ट ।

सम्बन्धः	उपाधिः	लिखने का क्रम
माता	श्रीमती	प्रथम, मध्य, अन्त्य नाम
पिता	श्रीमान्	प्रथम, मध्य, अन्त्य नाम
भगिनी	सुश्रीः	प्रथम, मध्य, अन्त्य नाम
भ्राता	श्रीमान्	प्रथम, मध्य, अन्त्य नाम
पितामही	श्रीमती	प्रथम, मध्य, अन्त्य नाम
पितामहः	श्रीमान्	प्रथम, मध्य, अन्त्य नाम
मातामही	श्रीमती	प्रथम, मध्य, अन्त्य नाम
मातामहः	श्रीमान्	प्रथम, मध्य, अन्त्य नाम

पाठ की टिप्पणी है कि मध्य-नाम हो तो पूरा लिखिए, न हो तो खाना खाली छोड़ दीजिए । कुल-नाम में केवल पहला अक्षर नहीं, पूरा नाम लिखना है ।

8.3 पूरे पाठ की पुनरावृत्ति

नीचे एक ही सारणी में पूरा पाठ समेटा गया है । परीक्षा से पहले केवल यही पढ़ लेना भी बहुत काम आता है ।

विषय	सार
वर्ण के भेद	स्वराः और व्यञ्जनानि
स्वर के भेद	समानाक्षराणि, सन्ध्यक्षराणि, अनुनासिक-स्वराः
व्यञ्जन के भेद	स्पर्शाः, अन्तःस्थाः, ऊष्माणः, अयोगवाहौ
स्पर्श वर्ण	पाँच वर्ग, कुल 25 वर्ण
अन्तःस्थ वर्ण	य र ल व, अर्ध-स्वर भी कहलाते हैं
ऊष्म वर्ण	श ष स ह
अयोगवाह	अं और अः
गुणिताक्षर	व्यञ्जन और स्वर के मेल से बना अक्षर
उच्चारण-स्थान	कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ, नासिका
द्विस्थानीय वर्ण	ए ऐ ओ औ, व, तथा पाँच नासिक्य वर्ण
मात्रा-काल	अर्ध, एक, दो, तीन मात्रा

स्मरण बिंदु

परीक्षा में सबसे ज़्यादा पूछे जाने वाले तीन प्रश्न हैं । वर्ण के भेद, व्यञ्जन के चार भेद, और छह उच्चारण-स्थान । इन तीनों के उत्तर पाठ की भाषा में ही लिखिए ।

सामान्य भूल

उत्तर लिखते समय अनुस्वार और विसर्ग छोड़ देना सबसे बड़ी गलती है । वर्णाः, स्वराः, व्यञ्जनानि जैसे शब्दों में विसर्ग और अनुस्वार अर्थ बदल देते हैं । इन्हें कभी न छोड़ें ।

दैनिक जीवन में

अपना पूरा नाम संस्कृत में लिखकर देखिए । उपाधि, प्रथम-नाम, मध्य-नाम और कुल-नाम अलग-अलग खानों में रखिए । पाठ का चौथा अभ्यास ठीक यही अभ्यास कराता है ।

Related Collegedunia Resources संबंधित संसाधन

- कक्षा 6 संस्कृतम् (दीपकम्) पाठ 1 के NCERT समाधान
- कक्षा 6 संस्कृतम् (दीपकम्) प्रश्न बैंक और अभ्यास-पत्र
- संस्कृत वर्णमाला का सूत्र संग्रह (2026-27)